

दादी की छवि हमारे जहन में एक सरल भाव

इस टॉपिक के अनुसार हम बात करते हैं कि दादी, एक बार हम सभी का एक ग्रुप जो दादी से मिलने के लिए गया था मधुबन में तो उसमें समय दादी जब हम सबसे मिल रही थीं तो उसमें मिलने का भाव हमने एक-एक से देखा कि कहीं कुछ ऐसा तो नहीं कि कोई ऐसा फील करे कि दादी मेरे से ठीक से नहीं मिली, इनसे बहुत अच्छे से मिली। तो हमने पाया कि ग्रुप में जितने भी सदस्य थे सभी ने दादी से वो अपनापन फ़ील किया। अपनेपन के साथ दादी के साथ बैठे और जब वहां से निकले तो पूरे सफर में उस लम्हे का ज़िक्र करते हुए आगे बढ़ते रहे। ऐसी छवि कैसे उन्होंने बनाई होगी! उससे एक बात बहुत गहरी समझ में आती है वो ये है कि दादी निरन्तर बाबा के साथ रहती थीं, निरन्तर बाबा को याद करती रहती थीं। कहती थीं मुरली का कितनी बार वो अध्ययन करती थीं। मुरली का मंथन बहुत जबरदस्त तरीके से करती थीं। और जैसे वो मुरली पढ़ती थीं और मुरली पढ़ने के बाद जब वो क्लास में आकर उसको एक्सप्लेन करती थीं तो दोनों में बहुत अंतर होता था। क्योंकि दादी जो पढ़ रही होती थीं वो उसको समा रही होती थीं। क्योंकि क्लास में सभी तरह के लोग बैठे होते थे, उसको जब एक्सप्लेन कर रही होती थीं तो उसको उस तरीके से एक्सप्लेन करती थीं ताकि सभी के अन्दर वो बाले भाव जायें, जो उन्होंने समझा था। तो सबके मन के भावों को जानने वाली कितनी बड़ी मनोवैज्ञानिकता दादी के अन्दर थीं।

जितनी भी बार मिले तो उनसे मिलने का बार अलग ही तरह का अनुभव होता था। बच्चों से मिलते दादी को देखा, दादी की क्लास सुनी लेकिन हर क्लास का एक अलग तरह का अनुभव हम सबके जहन में अभी भी तरोताज़ा है। जितने भी आज ब्रह्मावत्स हैं चाहे वो यज्ञ में हैं, चाहे नहीं। कुछ कारण वश आए कुछ चले भी गए हैं और आज जो हैं वो उनको याद भी करते हैं तो सिफर ये कि दादी सबके लिए समान भाव रखती थीं। चाहे वो कोई मजदूर हो, चाहे कोई काम करने वाला हो। दादी कहती थीं कि हर किसी का योगदान यहाँ अतुलनीय है, अमूल्य है। और सभी को सम्मान देना हमारा फर्ज है क्योंकि ये परमात्मा के बच्चे हैं। इनका एक-एक पल जो परमात्मा की याद में सफल हो रहा है उस पल का हमें सम्मान करना चाहिए। तो ये सारी बातें जब हम सोचते हैं तो ये बातें, क्या कहने मात्र कह देना ही ठीक है? या इसके पीछे हमें भी कुछ एफर्ट करना चाहिए? हमें भी कुछ प्रयास करना चाहिए कि इन्हाँने सहज और सरल भाव दादी कैसे लाती थीं। इसका एक जो हमें कारण समझ में आता है वो ये कि दादी ये सोचते थे कि ये सभी इस दुनिया में मेहमान हैं। और हम सब निमित्त हैं। जो निमित्तपन की, जो ट्रस्टीपन की कम्प्लीट डेफिनेशन थी वो दादी ने गहराई से समझी थी। हमारा यहाँ कुछ भी नहीं है इस बात की बहुत गहरी प्रैक्टिस



ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

होने के बाद व्यक्ति के अन्दर सहज भाव निश्चित रूप से आता है। ये दादी जी ने किया हुआ है। और उन्होंने निमित्पन की इतनी प्रेक्षित्स की, इतनी प्रैक्षित्स की, कि वो सबके सामने दिखता था। उनके सामने सब सहज रीति से अपने भाव खोल देते थे। अपने दिल के भाव खोल देते थे तो कहने का मतलब है जो जितना सहज और सरल होगा उसके पास जो भी आयेंगे तो वो सहज और सरल भाव से पेश भी होते हैं और अपनी बात भी बड़ी सादगी से कहकर चले जाते हैं। तो ये वाले जो कुछ अनुभव हैं वो जरूर हमें समझने होंगे थोड़े, उसकी अनुभूति भी करनी होगी।

अगर मैं उसको यहाँ फील करूँ, क्योंकि यहाँ मेरे अन्दर किसी से भी थोड़ा बहुत भी लगाव है, नफरत है, इर्ष्या है कुछ भी है, उसका कारण यहाँ पर ज्यादा से ज्यादा मेरापन है हरेक चीज के साथ। अगर मेरापन है तो हमारे अन्दर किसी न किसी तरह की, कोई न कोई आगोश या भाव उत्पन्न होते हैं। ये सारी कुछ जलकियां जो हमने देखी हैं, हमें समझ में आती हैं कि हमें कहाँ और किस लेवल तक परिवर्तन करना चाहिए। ताकि लोग जब इस परिवर्तन को देखें तो लगे कि हाँ सच में इन्होंने परमात्मा को पहचाना है, परमात्मा जैसा बनके दिखाया। तो सैम्पल के रूप में हमारी दादी प्रकाशमणि आज भी प्रकाशवान हैं सभी के जहन में, सभी के दिलों में। यादों तरोताजा हैं, वही सादगी, वही अदायगी, वही अंदाज सबकुछ बहुत सुन्दर और अच्छा था। आज भी वो जब हम सोचते हैं तो कुछ नया हमें मिल जाता है। तो इन्हीं कुछ यादों के साथ दादी जी को इस अवसर पर श्रद्धासुमन।

जीवन दर्शन

**बाबा ने मम्मा को ही
यज्ञ माता क्यों बनाया ?**



मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती

मम्मा में श्री लक्ष्मी के सब लक्षण स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ते थे। मम्मा सर्व दैवीगुणों से सम्पन्न थीं। मम्मा को देह से न्यारे होने के अभ्यास पर बहुत ध्यान रहता था। मम्मा के सामने कोई भी आता था कुछ बात करने के लिए, तो उनकी आवाज बंद हो जाती थी, अथवा ज्यादा बोल नहीं पाता था।
प्योरिटी की पर्सनेलिटी, रॉयल्टी, त्याग, फर्ज अदाई में सदा नम्बर वन थीं। इतनी छोटी आयु में इतना बड़ा परिवर्तन अपने में कर लेना - यह बहुत बड़ी विशेषता थी। मम्मा ने बाबा की वफादार बेटी बन कर्तव्य निभाने का और यज्ञ वत्सों की अलौकिक माँ बनकर फर्ज अदाई का - दोनों पार्ट बजाये। मम्मा के मुख से निकले वाक्य सभी के लिए वरदान बन जाते थे। एक आदर्श माँ के सभी गुण उनमें विद्यमान थे।

प्रश्न : मेरी एक सोलह साल की बेटी है। मैं उसे हर प्रकार की चीज़ें देती हूँ लेकिन वो कभी भी संतुष्ट नहीं होती और उसके मन में बहुत नकारात्मकता है और वो यह कहती हैं मैं जीना नहीं चाहती, मर जाना चाहती हूँ। मैं चाहती हूँ कि मेरी बेटी खुश रहे परन्तु मैं कैसे उसके श्रेष्ठ भविष्य की ओर उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करूँ?

ज्ञात : ईश्वरीय ज्ञान से हम जानते हैं कि आत्मा पूर्व जन्मों से बहुत कुछ लेकर आई है। हो सकता है आपसी संबंधों में, रिश्ते-नातों में भी आपकी बेटी को धोखा मिला हो, कष्ट मिला हो, हो सकता है वस्तुओं की अधिकता उनके पास रही हो लेकिन उससे उनको सुख न मिला हो, कष्ट बहुत पहुंचा हो, इसलिए उनके मन में असंतोष की भावना सदा-सदा के लिए घर कर गई है। उसी स्वरूप में उनकी मृत्यु हुई, भय कंटिन्यु रहा उनके जीवन में, तो वास्तव में इसका ईश्वरीय ज्ञान व राजयोग के द्वारा ही अच्छा हल किया जा सकता है। आपको क्या करना है कि रोज़ सवेरे उठकर दस मिनट अपनी बच्ची को गुड वायब्रेशन देने का तरीका ये अपनाएंगे कि मैं मास्टर ऑलमाइटी हूँ और ऑलमाइटी के गुड वायब्रेशन मुझे आ रहे हैं और फिर मुझ आत्मा से उस बच्ची को जा रहे हैं और वो बहुत खुश हो रही है। दूसरा सवेरे उठकर वहीं 5 बजे जब यह बच्ची सोयी हो, तो आप उसे बहुत अच्छे विचार देंगे, वायब्रेशन देंगे, तुम बहुत अच्छी आत्मा हो, बहुत खुश हो, तुम जैसी खुशनसीब इस संसार में काई नहीं। तूने तो बहुत अच्छे कर्म किये हैं। अब तुम सदा खुश रहा करो। तीसरी चौंक विजन, अपनी बच्ची को देखेंगी कि बच्ची मुस्करा रही है। बहुत आनंदित हो रही है, बहुत खुश हैं। अब हमारे घर में आनंद का, खुशी का माहाल हो गया है। स्थूल में तो आपने सबकुछ करके देख लिया कोई परिणाम नहीं निकला तो अब ये आध्यात्मिक मदद आपको उनकी करनी चाही।

प्रश्न : मेरी बेटी 7 साल की है और वो जो भी चीज़ें देखती है तो उनमें नेगेटिव देखने की उसका आदत है। वाहे वो सीरियल हो या घर में कुछ हो उसका नेगेटिव बातों की तरफ ही ध्यान जाता है। इसके लिए हम बहुत परेशान हैं कि आगे चलकर इसका बया होगा, इसकी रिस्थिति, इसका जीवन कहीं नेगेटिविटी से भर ना जाये। ऐसा क्यों है? और इसका निदान क्या है?

उत्तर : आजकल बच्चों में नेगेटिव की कछ ज्यादा

प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। ऐसा लगता है कि पर्व जन्म से ही ये आत्मायें ऐसे संस्कार लेकर आयी हैं। एक-दो पूर्व जन्म में ये बहुत नेगेटिव रहे और अब वो इतना कड़ा है कि इनको समझ भी कम है लेकिन ये सबको नेगेटिवली नोट करते रहते हैं। और घर में थोड़ी बहुत पति-पत्नी के बीच कुछ हो भी जाए उसको सदा के लिए अपने चित्त पर रख लेते हैं। इतनी तेज मेमरी उनकी नेगेटिव बातों को कैच करती है। ऐसी स्थिति में वो तो कुछ अभ्यास कर नहीं सकती हैं। ऐसी स्थिति में वो माँ-बाप के लिए एक बहुत बड़ी समस्या पैदा कर सकती हैं। और जहाँ भी जायेंगी उनके लिए भी। हर कोई पॉजिटिविटी चाहत है। इसलिए आपको क्या करना है कि आप उन्हें पवित्र भोजन खिलाइए। चार्ज करके पानी पिलाओ। पवित्र भोजन साना मैं प्रमाणित



- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

आत्मा हूँ ये अभ्यास करते भोजन बनाएं। तो जब बच्ची के शरीर में ये भोजन जायेगा तो हार्मोन्स पर, सेल्स पर एक पॉजिटिव इफेक्ट डालेगा। दूसरी चीज ये कि जब बच्ची सोयी हो तब उसे इमर्ज करके पांच मिनट उसे वायब्रेशन दें। और साथ में ये संकल्प दें कि यू आर पॉजिटिव। तुम पॉजिटिव हो... तुम पॉजिटिव हो। तुम्हारे अन्दर बहुत अच्छाई हैं। देव कुल की महान आत्मा हो। ऐसा लगातार तीन मास तक करें।

प्रश्न : मैं प्राइमरी स्कूल का टीचर हूँ, मैं ज्ञान में हूँ। जब मैंने स्कूल जावान किया था तो मैंने संकल्प लिया था कि मैं बच्चों पर कभी हाथ नहीं उठाऊंगा। कुछ महीने ऐसे ही हुआ लेकिन मैंने पाया कि प्रैविटकल में ऐसा करना सम्भव नहीं है बच्चे सिर पर ढढ़ जाते हैं और बात भी नहीं मानते। लेकिन जब वो बहुत नटखट हो जाते हैं तो उन पर हाथ भी उठाना पड़ता है लेकिन बाद में संकल्प भी बलते हैं कि बच्चों पर हाथ नहीं उठाना था। कृप्या बतायें कि ऐसी स्थिति में क्या किया जाये?

ज्ञात : बचपन ऐसा ही है जिसमें लड़ाई-झगड़ा भी करेंगे, एक दूसरे से मारपीट भी करेंगे। अगर उनको शांत बिठा दिया जाये तो वो बोर हो जायेंगे, सीरियस हो जायेंगे। वो थोड़ा शोर शराबा करते हैं। एक तो इस चीज़ को गम्भीरतापूर्वक न लिया जाये पहली बात तो ये। बच्चे भी लाइफ को एन्जॉय करें। लेकिन जब आप पढ़ायें तो इतना बैलेन्स करना है कि बच्चे पढ़ाई पर ध्यान दें। और जब आप पढ़ायें तो बच्चे ग्रहण करें। सभी को आत्मिक दृष्टि देखें कि ये सब चेतन आत्मायें हैं। भगवान के बच्चे हैं। ये बहुत अच्छी आत्मायें आयी हैं। भले ही उनका शरीर छोटा है पांच साल, छह साल, आठ साल, इससे उनको अच्छे वायब्रेशन जायेंगे। लक्ष्य हो कि टीचर बच्चों को अच्छे वायब्रेशन दें। दूसरी प्रैक्टिस हर पीरियड में अच्छे स्वमान की भी दो बार प्रैक्टिस की जाये। और तीसरा कम से कम एक मिनट परमात्मा से योग ताकि आत्मा से बहुत अच्छी तरंगें पूरी क्लास पर पड़े। और इसके रिजल्ट बहुत अच्छे होंगे। रही बात बच्चों को मारने-पीटने की, धमकाया तो अवश्य जाये। मारने-पीटने की बात ऐसे हैं कि अन्दर अगर क्रोध की अग्नि जलने लगे और तब किसी बच्चे को मारा जाये तो पश्चाताप उसके बाद होगा। लेकिन अगर बहुत लाइट, अच्छी रिथ्टि में हैं और किसी को सुधारने के लिए एक लगा दिया तो उससे न तो अपने पर बुरा असर आयेगा और ना ही बच्चों पर। अगर ये तीन चीजें आप करते हैं तो अपने पर भी सहज कंट्रोल होगा और बच्चों पर भी सहज कंट्रोल होगा।

Contact e-mail - bksurva8@yahoo.com

**मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका
अपना 'पीस ऑफ मार्ड चैनल'**

